

2 Timothy

2 तीमुथियुस

1 Greetings from Paul, an apostle of Christ Jesus. I am an apostle because God wanted me to be. God sent me to tell people about the promise of life that is in Christ Jesus.

² To Timothy, a dear son to me.

Grace, mercy, and peace to you from God the Father and from Christ Jesus our Lord.

Thanksgiving and Encouragement

³ I always remember you in my prayers day and night. And in these prayers I thank God for you. He is the God my ancestors served, and I have always served him with a clear conscience.

⁴ I remember that you cried for me. I want very much to see you so that I can be filled with joy. ⁵ I remember your true faith. That kind of faith first belonged to your grandmother Lois and to your mother Eunice. I know you now have that same faith. ⁶ That is why I want you to remember the gift God gave you. God gave you that gift when I laid my hands on you. Now I want you to use that gift and let it grow more and more, like a small flame grows into a fire. ⁷ The Spirit God gave us does not make us afraid. His Spirit is a source of power and love and self-control.

⁸ So don't be ashamed to tell people about our Lord Jesus. And don't be ashamed of me—I am in prison for the Lord. But suffer with me for the Good News. God gives us the strength to do that.

⁹ God saved us and chose us to be his holy people, but not because of anything we ourselves did. God saved us and made us his people because that was what he wanted and because of his grace. That grace was given to us through Christ Jesus before time began. ¹⁰ And now it has been shown to us in the coming of our Savior Christ Jesus. He destroyed death and showed us the way to have life. Yes, through the Good News Jesus showed us the way to have life that cannot be destroyed.

¹¹ I was chosen to tell people that message as

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है और जिसे यीशु मसीह में जीवन पाने की प्रतिज्ञा का प्रचार करने के लिए भेजा गया है:

शुभ्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम।

परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुझे करुणा, अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

धन्यवाद तथा प्रोत्साहन

³ रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में निरन्तर तुम्हारी याद करते हुए, मैं उस परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, और उसकी सेवा अपने पूर्वजों की रीति के अनुसार शुद्ध मन से करता हूँ। ⁴ मेरे लिए तुमने जो आँसू बहाये हैं, उनकी याद करके मैं तुमसे मिलने को आतुर हूँ, ताकि आनन्द से भर उठूँ। ⁵ मुझे तेरा वह सच्चा विश्वास भी याद है जो पहले तेरी नानी लोईस और तेरी माँ यूनीके में था। मुझे भरोसा है कि वही विश्वास तुझमें भी है। ⁶ इसलिए मैं तुझे याद दिला रहा हूँ कि परमेश्वर के वरदान की उस ज्वाला को जलाये रख जो तुझे तब प्राप्त हुई थी जब तुझ पर मैंने अपना हाथ रखा था। ⁷ क्योंकि परमेश्वर ने हमें जो आत्मा दी है, वह हमें कायर नहीं बनाती बल्कि हमें प्रेम, संयम और शक्ति से भर देती है।

⁸ इसलिए तू हमारे प्रभु या मेरी जो उसके लिए बंदी बना हुआ है, साक्षी देने से लजा मत। बल्कि तुझे परमेश्वर ने जो शक्ति दी है, उससे सुसमाचार के लिए यातनाएँ झेलने में मेरा साथ दे।

⁹ उसी ने हमारी रक्षा की है और पवित्र जीवन के लिए हमें बुलाया है - हमारे अपने किये कर्मों के आधार पर नहीं, बल्कि उसके अपने उस प्रयोजन और अनुग्रह के अनुसार जो परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह में हमें पहले ही अनादि काल से सौंप दिया गया है। ¹⁰ किन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकट होने के साथ-साथ हमारे लिये प्रकाशित किया गया है। उसने मृत्यु का अंत कर दिया तथा जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशित किया है।

¹¹ इसी सुसमाचार को फैलाने के लिये मुझे एक प्रचारक, प्रेरित और शिक्षक के रूप में नियुक्त

an apostle and teacher. ¹² And I suffer now because of that work. But I am not ashamed. I know the one I have believed, and I am sure that he is able to protect what he has trusted me with until that Day.*

¹³ What you heard me teach is an example of what you should teach. Follow that model of right teaching with the faith and love we have in Christ Jesus. ¹⁴ This teaching is a treasure that you have been trusted with. Protect it with the help of the Holy Spirit, who lives inside us.

¹⁵ You know that everyone in Asia has left me. Even Phygelus and Hermogenes have left me. ¹⁶ I pray that the Lord will show mercy to the family of Onesiphorus. Many times Onesiphorus encouraged me. He was not ashamed that I was in prison. ¹⁷ No, he was not ashamed. When he came to Rome, he looked and looked for me until he found me. ¹⁸ I pray that the Lord Jesus will make sure Onesiphorus receives mercy from the Lord God on that Day. You know how many ways this brother helped me in Ephesus.

A Loyal Soldier of Christ Jesus

2 Timothy, you are a son to me. Be strong in the grace that we have because we belong to Christ Jesus. ² What you have heard me teach publicly you should teach to others. Share these teachings with people you can trust. Then they will be able to teach others these same things. ³ As a good soldier of Christ Jesus, accept your share of the troubles we have. ⁴ A soldier wants to please his commanding officer, so he does not spend any time on activities that are not a part of his duty. ⁵ Athletes in a race must obey all the rules to win. ⁶ The farmer who works hard deserves the first part of the harvest. ⁷ Think about what I am saying. The Lord will help you understand it all.

Day The day Christ will come to judge everyone and take his people to live with him.

किया गया है। ¹² और यही कारण है जिससे मैं इन बातों का दुःख उठा रहा हूँ। और फिर भी लज्जित नहीं हूँ क्योंकि जिस पर मैंने विश्वास किया है, मैं उसे जानता हूँ और मैं यह मानता हूँ कि उसने मुझे जो सौंपा है, वह उसकी रक्षा करने में समर्थ है जब तक वह दिन* आये।

¹³ उस उत्तम शिक्षा को जिसे तूने मुझसे यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले विश्वास और प्रेम के साथ सुना है तू जो सिखाता है उसका आदर्श वही उत्तम शिक्षा है। ¹⁴ हमारे भीतर निवास करने वाली पवित्र आत्मा के द्वारा तू उस बहुमूल्य धरोहर की रखवाली कर जिसे तुझे सौंपा गया है।

¹⁵ जैसा कि तू जानता है कि वे सभी जो एशिया में रहते हैं, मुझे छोड़ गये हैं। फुगिलुस और हिरमुगिनेस उन्हीं में से हैं। ¹⁶ उनेसिफिरुस के परिवार पर प्रभु अनुग्रह करे। क्योंकि उसने अनेक अवसरों पर मुझे सुख पहुँचाया है। तथा वह मेरे जेल में रहने से लज्जित नहीं हुआ है। ¹⁷ बल्कि वह तो जब रोम आया था, जब तक मुझसे मिल नहीं लिया, यत्नपूर्वक मुझे ढूँढता रहा। ¹⁸ प्रभु करे उसे, उस दिन प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो, उसने इफिसुस में मेरी तरह-तरह से जो सेवाएँ की है तू उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता है।

मसीह यीशु का सच्चा सिपाही

2 जहाँ तक तुम्हारी बात है, मेरे पुत्र, यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले अनुग्रह से सुदृढ़ हो जा। ² बहुत से लोगों की साक्षी में मुझसे तूने जो कुछ सुना है, उसे उन विश्वास करने योग्य व्यक्तियों को सौंप दे जो दूसरों को भी शिक्षा देने में समर्थ हों। ³ यातनाएँ झेलने में मसीह यीशु के एक उत्तम सैनिक के समान मेरे साथ आ मिल। ⁴ ऐसा कोई भी, जो सैनिक के समान सेवा कर रहा है, अपने आपको साधारण जीवन के जंजाल में नहीं फँसाता क्योंकि वह अपने शासक अधिकारी को प्रसन्न करने के लिए यत्नशील रहता है। ⁵ और ऐसे ही यदि कोई किसी दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेता है, तो उसे विजय का मुकुट उस समय तक नहीं मिलता, जब तक कि वह नियमों का पालन करते हुए प्रतियोगिता में भाग नहीं लेता। ⁶ परिश्रमी कामगार किसान ही उपज का सबसे पहला भाग पाने का अधिकारी है। ⁷ मैं जो बताता हूँ, उस पर विचार कर। प्रभु तुझे सब कुछ समझने की क्षमता प्रदान करेगा।

वह दिन अर्थात् वह दिन जब सभी लोगों का न्याय करने के लिए यीशु मसीह आएगा और उन्हें अपने साथ रहने के लिए ले जाएगा।

⁸ Remember Jesus Christ. He is from the family of David. After Jesus died, he was raised from death. This is the Good News that I tell people. ⁹ And because I tell that message, I am suffering. I am even bound with chains like someone who has really done wrong. But God's message is not bound. ¹⁰ So I patiently accept all these troubles. I do this to help the people God has chosen so that they can have the salvation that is in Christ Jesus. With this salvation comes glory that never ends.

¹¹ Here is a true statement:

If we died with him,
we will also live with him.

¹² If we remain faithful even in suffering,
we will also rule with him.

If we refuse to say we know him,
he will refuse to say he knows us.

¹³ If we are not faithful, he will still be faithful,
because he cannot be false to himself.

A Worker Who Pleases God

¹⁴ Keep on telling everyone these truths. And warn them before God not to argue about words. Such arguments don't help anyone, and they ruin those who listen to them. ¹⁵ Do your best to be the kind of person God will accept, and give yourself to him. Be a worker who has no reason to be ashamed of his work, one who applies the true teaching in the right way.

¹⁶ Stay away from people who talk about useless things that are not from God. That kind of talk will lead a person more and more against God. ¹⁷ Their evil teaching will spread like a sickness inside the body. Hymenaeus and Philetus are men like that. ¹⁸ They have left the true teaching. They say that the day when people will be raised from death has already come and gone. And they are destroying the faith of some people.

¹⁹ But God's strong foundation never moves, and these words are written on it: "The Lord knows those who belong to him."* Also, these

⁸ यीशु मसीह का स्मरण करते रहो जो मरे हुआओं में से पुरज्जीवित हो उठा है और जो दाऊद का वंशज है। यही उस सुसमाचार का सार है जिसका मैं उपदेश देता हूँ ⁹ इसी के लिए मैं यातनाएँ झेलता हूँ। यहाँ तक कि एक अपराधी के समान मुझे जंजीरों से जकड़ दिया गया है। किन्तु परमेश्वर का वचन तो बंधन रहित है। ¹⁰ इसी कारण परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिये मैं हर दुःख उठाता रहता हूँ ताकि वे भी मसीह यीशु में प्राप्त होने वाले उद्धार को अनन्त महिमा के साथ प्राप्त कर सकें।

¹¹ यह वचन विश्वास के योग्य है कि:

यदि हम उसके साथ मरे है,
तो उसी के साथ जीयेंगे,

¹² यदि दुःख उठाये हैं तो उसके साथ
शासन भी करेंगे।

यदि हम उसको छोड़ेंगे,
तो वह भी हमको छोड़ देगा,

¹³ हम चाहे विश्वासहीन हो पर
वह सदा सर्वदा विश्वासनीय रहेगा
क्योंकि वह अपना इन्कार नहीं कर सकता।

स्वीकृत कार्यकर्ता

¹⁴ लोगों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहो और परमेश्वर को साक्षी करके उन्हें सावधान करते रहो कि वे शब्दों को लेकर लड़ाई झगड़ा न करें। ऐसे लड़ाई झगड़ों से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि इन्हें जो सुनते हैं, वे भी नष्ट हो जाते हैं। ¹⁵ अपने आप को परमेश्वर द्वारा ग्रहण करने योग्य बनाकर एक ऐसे सेवक के रूप में प्रस्तुत करने का यत्न करते रहो जिससे किसी बात के लिए लज्जित होने की आवश्यकता न हो। और जो परमेश्वर के सत्य वचन का सही ढंग से उपयोग करता है।

¹⁶ और सांसारिक वाद विवादों तथा व्यर्थ की बातों से बचा रहता है। क्योंकि ये बातें लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाती हैं। ¹⁷ ऐसे लोगों की शिक्षाएँ नासूर की तरह फैलेंगी। हुमिनयुस और फिलेतुस ऐसे ही हैं। ¹⁸ जो सच्चाई के बिन्दु से भटक गये हैं। उनका कहना है कि पुनरुत्थान तो अब तक हो भी चुका है। ये कुछ लोगों के विश्वास को नष्ट कर रहे हैं।

¹⁹ कुछ भी हो परमेश्वर ने जिस सुदृढ़ नींव को डाला है, वह दृढ़ता के साथ खड़ी है। उस पर अंकित है, "प्रभु अपने भक्तों को जानता है।"*

words are written there: “Everyone who says they believe in the Lord must stop doing wrong.”

²⁰In a large house there are things made of gold and silver. But there are also things made of wood and clay. Some of these are used for special purposes, others for ordinary jobs. ²¹The Lord wants to use you for special purposes, so make yourself clean from all evil. Then you will be holy, and the Master can use you. You will be ready for any good work.

²²Stay away from the evil things a young person like you typically wants to do. Do your best to live right and to have faith, love, and peace, together with others who trust in the Lord with pure hearts. ²³Stay away from foolish and stupid arguments. You know that these arguments grow into bigger arguments. ²⁴As a servant of the Lord, you must not argue. You must be kind to everyone. You must be a good teacher, and you must be patient. ²⁵You must gently teach those who don't agree with you. Maybe God will let them change their hearts so that they can accept the truth. ²⁶The devil has trapped them and now makes them do what he wants. But maybe they can wake up to see what is happening and free themselves from the devil's trap.

Many People Will Stop Loving God

3 Remember this: There are some terrible times coming in the last days. ²People will love only themselves and money. They will be proud and boast about themselves. They will abuse others with insults. They will not obey their parents. They will be ungrateful and against all that is pleasing to God. ³They will have no love for others and will refuse to forgive anyone. They will talk about others to hurt them and will have no self-control. They will be cruel and hate what is good. ⁴People will turn against their friends. They will do foolish things without thinking and will be so proud of themselves. Instead of loving God, they will love pleasure. ⁵They will go on pretending to be devoted to God, but they will refuse to let that “devotion” change the way they live. Stay away from these people!

और “वह हर एक, जो कहता है कि वह प्रभु का है, उसे बुराइयों से बचे रहना चाहिए।”

²⁰एक बड़े घर में बस सोने-चाँदी के ही पात्र तो नहीं होते हैं, उसमें लकड़ी और मिट्टी के बरतन भी होते हैं। कुछ विशेष उपयोग के लिए होते हैं और कुछ साधारण उपयोग के लिए। ²¹इसलिए यदि व्यक्ति अपने आपको बुराइयों से शुद्ध कर लेता है तो वह विशेष उपयोग का बनेगा और फिर पवित्र बन कर अपने स्वामी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। और किसी भी उत्तम कार्य के लिए तत्पर रहेगा।

²²जवानी की बुरी इच्छाओं से दूर रहो धार्मिक जीवन, विश्वास, प्रेम और शांति के लिये उन सब के साथ जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम पुकारते हैं, प्रयत्नशील रहो। ²³मूर्खतापूर्ण, बेकार के तर्क वितर्कों से सदा बचे रहो। क्योंकि तुम जानते ही हो कि इनसे लड़ाई-झगड़े पैदा होते हैं। ²⁴और प्रभु के सेवक को तो झगड़ना ही नहीं चाहिए। उसे तो सब पर दया करनी चाहिए। उसे शिक्षा देने में योग्य होना चाहिए। उसे सहनशील होना चाहिए। ²⁵उसे अपने विरोधियों को भी इस आशा के साथ कि परमेश्वर उन्हें भी मन फिराव करने की शक्ति देगा, विनम्रता के साथ समझाना चाहिए। ताकि उन्हें भी सत्य का ज्ञान हो जाये ²⁶और वे सचेत होकर शैतान के उस फन्दे से बच निकलें जिसमें शैतान ने उन्हें जकड़ रखा है ताकि वे परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण कर सकें।

अंतिम दिनों में

3 याद रखो अंतिम दिनों में हम पर बहुत बुरा समय आयेगा। ²लोग स्वार्थी, लालची, अभिमानी, उद्वण्ड, परमेश्वर के निन्दक, माता-पिता की अवहेलना करने वाले, निर्दय, अपवित्र ³प्रेम रहित, क्षमा-हीन, निन्दक, असंयमी, बर्बर, जो कुछ अच्छा है उसके विरोधी, ⁴विश्वासघाती, अविवेकी, अहंकारी और परमेश्वर-प्रेमी होने की अपेक्षा सुखवादी हो जायेंगे। ⁵वे धर्म के दिखावटी रूप का पालन तो करेंगे किन्तु उसकी भीतरी शक्ति को नकार देंगे। उनसे सदा दूर रहो।

⁶ Some of them go into homes and get control over weak women, whose lives are full of sin—women who are led into sin by all the things they want. ⁷ These women always want to learn something new, but they are never able to fully understand the truth. ⁸ Just as Jannes and Jambres fought against Moses, these people fight against the truth. Their thinking has been confused. The faith they have and teach is worthless. ⁹ But they will not succeed in what they are trying to do. Everyone will see how foolish they are. That is what happened to Jannes and Jambres.

Last Instructions

¹⁰ But you know all about me. You know what I teach and the way I live. You know my goal in life. You know my faith, my patience, and my love. You know that I never stop trying. ¹¹ You know about my persecutions and my sufferings. You know all the things that happened to me in Antioch, Iconium, and Lystra—the persecution I suffered in those places. But the Lord saved me from all of it. ¹² Everyone who wants to live showing true devotion to God in Christ Jesus will be persecuted. ¹³ People who are evil and cheat others will become worse and worse. They will fool others, but they will also be fooling themselves.

¹⁴ But you should continue following the teaching you learned. You know it is true, because you know you can trust those who taught you. ¹⁵ You have known the Holy Scriptures since you were a child. These Scriptures are able to make you wise. And that wisdom leads to salvation through faith in Christ Jesus. ¹⁶ All Scripture is given by God. And all Scripture is useful for teaching and for showing people what is wrong in their lives. It is useful for correcting faults and teaching the right way to live. ¹⁷ Using the Scriptures, those who serve God will be prepared and will have everything they need to do every good work.

4 Before God and Jesus Christ I give you a command. Christ Jesus is the one who will judge all people—those who are living and those

‘क्योंकि इनमें से कुछ ऐसे हैं जो घरों में घुस पैठ करके पापी, दुर्बल इच्छा शक्ति की पापपूर्ण हर प्रकार की इच्छाओं से चलायमान स्त्रियों को वश में कर लेते हैं। ⁷ ये स्त्रियाँ सीखने का जतन तो सदा करती रहती हैं, किन्तु सत्य के सम्पूर्ण ज्ञान तक वे कभी नहीं पहुँच पाती। ⁸ यन्नेस और यम्ब्रेस ने जैसे मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये लोग सत्य के विरोधी हैं। इन लोगों की बुद्धि भ्रष्ट है और विश्वास का अनुसरण करने में ये असफल हैं। ⁹ किन्तु ये और अधिक आगे नहीं बढ़ पायेंगे क्योंकि जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस की मूर्खता प्रकट हो गयी थी, वैसे ही इनकी मूर्खता भी सबके सामने उजागर हो जायेगी।

अंतिम आदेश

¹⁰ कुछ भी हो, तूने मेरी शिक्षा का पालन किया है। मेरी जीवन पद्धति, मेरे जीवन के उद्देश्य, मेरे विश्वास, मेरी सहनशीलता, मेरे प्रेम, मेरे धैर्य ¹¹ मेरी उन यातनाओं और पीड़ाओं में मेरा साथ दिया है तुम तो जानते ही हो कि अंताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझे कितनी भयानक यातनाएँ दी गयी थीं जिन्हें मैंने सहा था। किन्तु प्रभु ने उन सबसे मेरी रक्षा की। ¹² वास्तव में परमेश्वर की सेवा में जो नेकी के साथ जीना चाहते हैं, सताये ही जायेंगे। ¹³ किन्तु पापी और ठग दूसरों को छलते हुए तथा स्वयं छले जाते हुए बुरे से बुरे होते चले जायेंगे।

¹⁴ किन्तु तुमने जिन बातों को सीखा और माना है, उन्हें करते जाओ। तुम जानते हो कि उन बातों को तुमने किनसे सीखा है। ¹⁵ और तुझे पता है कि तू बचपन से ही पवित्र शास्त्रों को भी जानता है। वे तुझे उस विवेक को दे सकते हैं जिससे मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा छुटकारा मिल सकता है। ¹⁶ सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। यह लोगों को सत्य की शिक्षा देने, उनको सुधारने, उन्हें उनकी बुराइयाँ दर्शाने और धार्मिक जीवन के प्रशिक्षण में उपयोगी है। ¹⁷ जिससे परमेश्वर का प्रत्येक सेवक शास्त्रों का प्रयोग करते हुए हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के लिये समर्थ और साधन सम्पन्न होगा।

4 परमेश्वर को साक्षी करके और मसीह यीशु को अपनी साक्षी बना कर जो सभी जीवितों और जो मर चुके हैं, उनका न्याय करने वाला है, और क्योंकि उसका पुनःआगमन तथा उसका राज्य निकट है, मैं तुझे शपथ पूर्वक आदेश

who have died. He is coming again to rule in his kingdom. So I give you this command: ²Tell everyone God's message. Be ready at all times to do whatever is needed. Tell people what they need to do, tell them when they are doing wrong, and encourage them. Do this with great patience and careful teaching.

³The time will come when people will not listen to the true teaching. But people will find more and more teachers who please them. They will find teachers who say what they want to hear. ⁴People will stop listening to the truth. They will begin to follow the teaching in false stories. ⁵But you should control yourself at all times. When troubles come, accept them. Do the work of telling the Good News. Do all the duties of a servant of God.

⁶My life is being given as an offering for God. The time has come for me to leave this life here. ⁷I have fought the good fight. I have finished the race. I have served the Lord faithfully. ⁸Now, a prize is waiting for me—the crown that will show I am right with God. The Lord, the judge who judges rightly, will give it to me on that Day. Yes, he will give it to me and to everyone else who is eagerly looking forward to his coming.

Personal Notes

⁹Do your best to come to me as soon as you can. ¹⁰Demas loved this world too much. That is why he left me. He went to Thessalonica. Crescens went to Galatia. And Titus went to Dalmatia. ¹¹Luke is the only one still with me. Get Mark and bring him with you when you come. He can help me in my work here. ¹²I sent Tychicus to Ephesus.

¹³When I was in Troas, I left my coat there with Carpus. So when you come, bring it to me. Also, bring my books. The books written on parchment are the ones I need.

¹⁴Alexander the metalworker caused me so much harm. The Lord will punish him for what he did. ¹⁵He fought against everything we teach. You should be careful that he doesn't hurt you too.

देता हूँ: ²सुसमाचार का प्रचार कर। चाहे तुझे सुविधा हो चाहे असुविधा, अपना कर्तव्य करने को तैयार रह। लोगों को क्या करना चाहिए, उन्हें समझा। जब वे कोई बुरा काम करें, उन्हें चेतावनी दे। लोगों को धैर्य के साथ समझाते हुए प्रोत्साहित कर।

³मैं यह इसलिए बता रहा हूँ कि एक समय ऐसा आयेगा जब लोग उत्तम उपदेश को सुनना तक नहीं चाहेंगे। वे अपनी इच्छाओं के अनुकूल अपने लिए बहुत से गुरु इकट्ठे कर लेंगे, जो वही सुनाएँगे जो वे सुनना चाहते हैं। ⁴वे अपने कानों को सत्य से फेर लेंगे और कल्पित कथाओं पर ध्यान देने लगेंगे। ⁵किन्तु तू निश्चयपूर्वक हर परिस्थिति में अपने पर नियन्त्रण रख, यातनाएँ झेल और सुसमाचार के प्रचार का काम कर। जो सेवा तुझे सौंपी गयी है, उसे पूरा कर।

⁶जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो अब अर्घ के समान उँडेला जाने पर हूँ। और मेरा तो इस जीवन से विदा लेने का समय भी आ पहुँचा है। ⁷मैं उत्तम प्रतिस्पर्द्धा में लगा रहा हूँ। मैं अपनी दौड़, दौड़ चुका हूँ। मैंने विश्वास के पन्थ की रक्षा की है। ⁸अब विजय मुकुट मेरी प्रतीक्षा में है। जो धार्मिक जीवन के लिये मिलना है। उस दिन न्यायकर्ता प्रभु मुझे विजय मुकुट पहनायेगा। न केवल मुझे, बल्कि उन सब को जो प्रेम के साथ उसके प्रकट होने की बात जोहते रहे हैं।

निजी संदेश

⁹मुझसे जितना शीघ्र हो सके, मिलने आने का पूरा प्रयत्न करना। ¹⁰क्योंकि इस जगत के मोह में पड़ कर देमास ने मुझे त्याग दिया है और वह थिस्सलुनीके को चला गया है। क्रेसकैस गलातिया को तथा तीतुस दलमलिया को चला गया है। ¹¹केवल लूका ही मेरे पास है। मरकुस के पास जाना और जब तू आये, उसे अपने साथ ले आना क्योंकि मेरे काम में वह मेरा सहायक हो सकता है। ¹²तिथिकुस को मैं इफिसुस भेज रहा हूँ।

¹³जब तू आये, तो उस कोट को, जिसे मैं त्रोआस में करपुस के घर छोड़ आया था, ले आना। मेरी पुस्तकों, विशेष कर चर्म-पत्रों को भी ले आना।

¹⁴ताम्रकार सिकन्दर ने मुझे बहुत हानि पहुँचाई है। उसने जैसा किया है, प्रभु उसे वैसा ही फल देगा। ¹⁵तू भी उस से सचेत रहना क्योंकि वह हमारे उपदेश का घोर विरोध करता रहा है।

¹⁶The first time I defended myself, no one helped me. Everyone left me. I pray that God will forgive them. ¹⁷But the Lord stayed with me. The Lord gave me strength so that I could tell the Good News everywhere. He wanted all those who are not Jews to hear that Good News. So I was saved from the lion's mouth. ¹⁸The Lord will save me when anyone tries to hurt me. He will bring me safely to his heavenly kingdom. Glory forever and ever be the Lord's. Amen.

Final Greetings

¹⁹Give my greetings to Priscilla and Aquila and to the family of Onesiphorus. ²⁰Erastus stayed in Corinth. And I left Trophimus in Miletus—he was sick. ²¹Try as hard as you can to come to me before winter.

Greetings to you from Eubulus, Pudens, Linus, Claudia, and all the brothers and sisters here.

²²The Lord be with your spirit. Grace be with you.

¹⁶प्रारम्भ में जब मैं अपना बचाव प्रस्तुत करने लगा तो मेरे पक्ष में कोई सामने नहीं आया। बल्कि उन्होंने तो मुझे अकेला छोड़ दिया था। परमेश्वर करे उन्हें इसका हिसाब न देना पड़े। ¹⁷मेरे पक्ष में तो प्रभु ने खड़े होकर मुझे शक्ति दी। ताकि मेरे द्वारा सुसमाचार का भरपूर प्रचार हो सके, जिसे सभी गैर यहूदी सुन पायें। सिंह के मुँह से मुझे बचा लिया गया है। ¹⁸किसी भी पापपूर्ण हमले से प्रभु मुझे बचायेगा और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षा पूर्वक ले जायेगा। उसकी महिमा सदा-सदा होती रहे। आमीन!

पत्र का समापन

¹⁹प्रिसकिल्ला, अक्विला और उनेसिफुरुस के परिवार को नमस्कार कहना। ²⁰इरास्तुस कुरिन्थुस में ठहर गया है। मैंने त्रुफिमस को उसकी बीमारी के कारण मिलेतुस में छोड़ दिया है। ²¹जाड़ों से पहले आने का जतन करना।

यूबुलुस, पूदेस, लिनस तथा क्लौदिया तथा और सभी भाईयों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

²²प्रभु तेरे साथ रहे। तुम सब पर प्रभु का अनुग्रह हो।